॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ श्रीवीतरागायनमः ॥ अथऋषिपुत्रप्रणीतनिमित्तशास्त्रंलिख्यते ॥ अथभाषा
कारस्तुतिः ॥ दोहा ॥ ऋषभजिनेश्वरकोनमूंकरनशुद्धसम्यक्त ॥ तीर्थंकरकेन्हवनसें ॥ भावनसुखअव्यक्त ॥ १ ॥
॥ सोरठा ॥ वन्दौंगुरुपदपद्मकृपायतनभवदुःखहर ॥ महाकर्मतमपुंज ॥ जासुवचनरविउदयसम ॥ २ ॥
दोहा ॥ सरस्वतिकोनमनकरि ॥ प्राकृतगहनविचार ॥ भाषाशास्त्रनिमित्तकी ॥ कथूंबुद्धिअनुसार ॥ ३ ॥ इतिभा
षाकारस्तुतिः ॥ ॥ अथमूलग्रंथकर्त्तास्तुतिप्रारंभः ॥ गाथा ॥ सोजयउजयउऋसहो ॥ अणंत
संसारसायरुत्तिण्णो ॥ झाणेणलेण ॥ जेयरणा ॥ जीलाइंदियइंदियमणो ॥ १ ॥ भाषार्थ ॥ वहऋषभदेवस्वामी
कि जिन्होंनेइसअनंतसंसारकोइंद्रियदमनकाउपदेशदेकरध्यानमेंमग्नहोगये सदाकालजयवंतरहो ॥ १ ॥
॥ गाथा ॥ णमिऊणवद्धमाणं ॥ णवकेवललद्धिमंडियंविमलं ॥ वोच्छंदव्वणिमित्तं ॥ रिसिपुत्तियणामदोत
स्स ॥ २ ॥ भाषार्थ ॥ अबमैंऋषिपुत्रनामका वर्द्धमानतीर्थंकरजोकेवलज्ञानरूपीलब्धिकरिकेयुक्तहैं ॥ उनको
नमस्कारकरकेनिमित्तशास्त्रकोप्ररूपणकरताहूं ॥ २ ॥ गाथा ॥ अहस्वतुमारिसिपुत्तिय ॥ णामणिमित्तपा

यणं॥मवकवइस्सा॥मिवग्गामुणिमिद्धकम्मं॥जोइसणाणोविहयणाविऊणाब्रवणितुप्पायं॥तंखलुनिमिहे
णावुच्छामि॥३॥भावार्थ॥यहनिश्चयहैनिमित्तशास्त्रतीनप्रकारसेजैसाकिज्ञानियोंनेनिरूपणकीयाहै।मैंरू
पिमुत्रकहताहूं॥३॥गाथा॥जेदिठभुविरसणा॥जेदिठाकुठमेणकन्नाणं॥सदसंकुलेनदिठा॥वउसठियाणा
णुणाधियाण॥४॥भावार्थ॥जोपृथ्वीपरदेखाजावैआकाशमेंदिखाईदेऔरजिसकाशब्दहीसुनाईदेइसत
रहसेनिमित्तशास्त्रकेतीनभेदहैं।यहज्ञानबुद्धिसेजाननाचाहिए॥४॥गाथा॥जेचारणाणदिठा।आंदेसायस
हस्सणाणेण॥जोपाहुडेणभणिया॥तंखलुनिमिहेणवुच्छामि॥५॥भावार्थ॥जोचारणमुनियोंनेदेखाऔरस्त्रा
नसेशुभाशुभवर्णनकीया॥औरपंडितोंनेभीवैसाहीवर्णनकीया॥उसीहीनिमित्तज्ञानकेतीनप्रकारजोरूप
रकनलातुकेहैंकहताहूं॥५॥गाथा॥सूरोदयअथमणे॥चंदमसारिक्खमग्गगहचरियं॥तंपिछियंणिमित्तं
सबंआएसिहंकुणाहं॥भावार्थ॥सूर्योदयसमयपहलेआकाशसंबंधीनिमित्तबनलातेहैं।सूर्यउदयकेपह
लेऔरसूर्यअस्तकेपश्चात्जोचंद्रग्रहोंवगैरहकाचलताहैनिमित्तज्ञानवालेकोउसराहकीतरफदेखकरस

बहालुमालुमकरनाचाहिये॥६॥गाथा॥सूरोय उयवमाणो रत्तुप्पलसमहोवदी जिज्ञा तो कुणइ राइम
रणं॥ मंती पुत्तं विणासेई॥भावार्थ॥सूर्योदयसमयसबदिशाां एकदम लालसूंगकी मिषालहोजावेतो
जानों इसदेशकेराजा यादीवानका लड़का मृत्युप्राप्तहोगा॥७॥गाथा॥समलोहियमहोवरी संकुणइ
त्तिहो इणायव्वो॥ संगामं पुण घोरं॥ खग्गंसूरो णिवेदेइ॥८॥भावार्थ॥अगरमानकयाखूनकेमानिंदसूर्यो
दयसमयदिशायें होजावें तो जानलो कि यहां घोर युद्ध होगा और खूब तलवारें चलेंगी॥८॥ ॥गाथा॥
हेमंतम्मियउरहा गिम्मे सीयंपसुच्चए सूरो लोयस्सवाहिमरणं कालेकालेण संदेहो॥९॥भावार्थ॥अग
रसूर्यसहेमंतऋतुमेंगर्म और ग्रीषमऋतुमेंसरदीहो तो जानो कि मनुष्य बारबार बीमारीसेदुःखउठा
वेंगे॥९॥गाथा॥उदयच्छमणो सूरो अग्गिफुलिंगवणायमुच्चंतो॥ दीसिज्जजम्मि देसे तम्मि विणासो णि
वेदेदि॥१०॥भावार्थ॥सूर्योदय और अस्तहोनेकेसमय ऐसामालुमहोकि सूर्यके अंदरसे आगकी चिनगा
रियां निकलती हैं तो जानो कि इसदेशमें हरसूरतसे नुकसानपैदाहोंगे॥१०॥गाथा॥अहणिम्महोवदीसइ

उछंतो धूलिधूसरो छाये। सो कुणइ राइमरणं वीसदिणअंतरे सूरो॥२१॥भावार्थ॥सूर्योदसमयऐसामालु
महो कि सूर्यसे धूआं धूल निकलरहा है तो एकमासके अंदर राजाका मरण होगा॥२१॥गाथा॥ उदयच्छमणे
सूरो नकोइ वदीसए णाहयलम्मि। सोअइरेणयसाहइ दिसिमंतिवहरायमरणं च॥२२॥भावार्थ॥सूर्योदयऔ
र अस्तसमय यदि सूर्य वक्राकृति मालुम होतो जानो कि अवश्य राजा या मंत्री का मरण होगा॥२२॥गाथा॥जइ
मछ्छासरिसेणंमध्येणाइसपरणुविअब्भेणंठायइउइंतो। तोयसभयणिवेएइ॥२३॥भावार्थ॥ अव
सूर्यके चिन्हफल कहते हैं॥ अगर सूर्योदसमय सूर्यके अंदरसे जाज्वल्यमान मच्छीके आकार उठता हुआ दि
न्हमालुम दे तो वो मनुष्योंको भयका कारण होता है॥२३॥गाथा॥णरणूवेणअंसंगी ढोजइदीसए समुइंतो॥
जंदेसम्मि जदीसइ छमासविब्भासराणं च॥२४॥भावार्थ॥ सूर्यसे लंबी ज्वाला उठती हुई दिखाई देतो छह म
हीनेके अंदर देशनवाह हो जावे॥२४॥गाथा॥ अहसूरपासउइवा दो मच्छा डिसए उजया विदिआ सावेकुण
इ पीडा णायाणं वा हिरायं च॥२५॥भावार्थ॥ सूर्योदसमय यदि सूर्यके आसपास दूसरा सूर्य उघो। नवंतदिखा

२देतोजानलोकिराकमाहमैंराजाऔरप्रजाकोव्याधिसेकष्टहोगा॥२४॥गाथा॥अहदीसइजइरविंदो॥उक्कलो
लिधूसरोसरो॥सोकुणइवाहिमरणं॥देसविणासंचदुब्भिक्खं॥२५॥भावार्थ॥अगरसूर्यकेटुकडेटुकडेनज
रउसमेंधूलधुआंउडतादिखाईदेतोयहबतलाताहैकिव्याधिसेदेशपीडितऔरदुष्कालसे
गा॥२५॥गाथा॥अहमंडलेणगुद्दंपीयघमंजिंसरिसंकिरहणं॥सोकुणइणवरसभयापं
सणासंदेहो॥२७॥भावार्थ॥सूर्यास्तसमययदिसूर्यकेइर्दगिर्दबैंगनीपीलामजीठीऔरकाला
उस्तदिखाईदेतोपांचवेंरोजअवश्यनवरसोसवराबीपैदाहोगी॥२७॥गाथा॥अहहच्छिसाससमंडो॥सूर
णाथिरुमक्कमइ॥सोकुणइरायमरणं॥छठदियहेणासंदेहो॥२८॥भावार्थ॥अगरसमयऔरसूर्यकेसद्ध
खाईदेवतोजानलोकिछठेदिनराजाकामरणअवश्यहोयगा॥२८॥गाथा॥अहण
च्छिभवेहिंसा॥सापंचसम्मिमासं रायंरसेणावदोहि॥२९॥भावार्थ॥सूर्यअस्त
२ ग्गासादिखाईदेकि उसमेंसेबहुतपुरुषाकृतिशाखाएंजाज्वल्यमाननिकलरहीहैतोजानलोकिपांचवें

महोनें बहुतसे आदमी हरारा व मूतमैरोगेंगे॥१९॥गाथा॥उदयछमणो सूरो॥सूरोहिं बहुराहि दीसए विंबो॥
मासे विदियजुसे ना नहसोहोइणायव्वो॥२०॥भाषार्थ॥सूर्ये उदय और अस्तसमय सूर्य में छेद दिखाई देतो व
हां परा सीतलवार चलेंगी॥ कि॰ जिससे बहुतसे मनुष्य छेद जावेंगे॥२०॥गाथा॥अहधूमो अच्छयणो॥गि
म्हम्मि यदीसय जयसूरो॥ देसम्मि इंदघोरो नेरस दियहम्मजुसंचा॥२१॥भाषार्थ॥सूर्यास्तसमय यदि सूर्य
के अंदरसे एसा मालुम हो कि॰ धूएं के गोले निकलरहे हैं तो जानलो कि॰ तेरह दिन यहां युद्ध होगा॥२१॥
गाथा॥ अहमहोणहफलये पउमिणिसुरिसुधदीसए जह॥ सो पंचम्मि पदियहे वायं वरिसं च कावेइ॥२
भाषार्थ॥ अवमेघचिन्ह कहते हैं॥ यदि सूर्य के गिर्दे मंडल कमलाकार नजर आवे तो पांचवें दिन हवा चल
क पानी बरसेगा॥२२॥गाथा॥मुसलसरिछोमहो दीसइ वजालपव्वया भाषा॥सो सत्तमम्मि दिवहे वायं व
रिसं च कावेइ॥२३॥भाषार्थ॥ अगर सूर्य के गिर्दे मूसल के आकार मंडल नजर आवे तो जानलो कि॰ सातवें
ज अवश्य पानी बरसेगा॥२३॥गाथा॥ अहदीसइ परधीउ॥ उदयछवणम्मि उद्दिनाथाओ॥ तो तइरा पुणदि

यहोवादंवरिसं चक्कोवेइ॥२४॥भाषार्थ॥सूर्य उदय और अस्तसमय यदि गोलमंडल इर्द गिर्द नजर आवै तो ती
सरे दिवस पानी अवश्य बरसैगा॥२४॥गाथा॥हेमन्त क तुणक मि एहमुवदक्खिणायजपवाउ॥ अमुस्स दि
सावापइ वरिसासुत्तछन्नायवो॥२५॥भाषार्थ॥हेमन्तऋतु मैं सर्दी मिलो हुई हवा दक्षिण की चलै तो जानलो
वर्षा करैगी॥२५॥गाथा॥ववरूपसूरसुदयाछमसे पडंति जलविंदऊणहपलाऊ॥ न इहो दिपह वरिसइ
नहो सए छिसंदेहो॥२६॥भाषार्थ॥सूर्योदय और अस्तसमय यदि जल ओस के मा फिक पडै तो कहदो कि
इस सेतो सरे रोज अवश्य पानी पडैगा॥२६॥गाथा॥जदि चंडवाउवायदि अहमुणमइ मिवायववाऊ॥न
हिंहाही जलवरसो मंचम दिवहो ए मंदेहो॥भाषार्थ॥यदि प्रचंड हवा चलै और बीच बीच मैं फिर धीमी हवा
चलै तो जानलो कि पांचवें दिन अवश्य पानी बरसैगा॥२७॥गाथा॥छित्तणको इसुवश घरम्मिजायंतहइवस
णावा॥उदकुंभम्मियहच्छा वरसइ अज्जंतणायञ्चो॥२८॥भाषार्थ॥ अचानक कोई पूछे कि कोंसा हवम क
न छालिया और कपडों मैं सर्दी मालुम होने लगे॥ जल के कलशों का जल गर्म रहै तो जानो कि आजकल मेंजल

रपानीआवैगा॥१८॥गाथा॥सूहोपीययवसा॥मज्जिठरायसरिसवसा॥चारत्तानीलयवसा॥ [illegible]
[illegible]......वायंवारिसंणिवेदेहि॥१९॥भावार्थ॥अगरसूर्यास्तया उदयसमय आकाशपी ला मजीठ नारं
गीसमांनमालुमहोनो यहसूचितकरताहैकि·हवाचलके पानीवरसैगा॥१९॥गाथा॥णुप्पयवससरिछ
छिकतिज्जसत्तिवेदन्ति॥णिपहधूसरवसा॥माहीमरणंणिवेदेहि॥२०॥भावार्थ॥नमाखूरंगकासंध्यासम
यवादलहोयाखाखीरंगकाहोवे यावादलमेंछिद्रसेहोंतोजानलोकि·पानीकाअंतहुआ॥२०॥गाथा॥अह
खंडभिस्समिस्सा॥गोमुत्तसरिछयवडवसा॥मा॥सकुणाइएमरणं॥मदंवरसत्तिवेदेहि॥२१॥भावार्थ॥बादल
खंडखंडऔरगोमूत्रोसेआकृतिरूपणावर्णसूर्यास्तया उदयसमयनजर आवैतोराजामरणऔर अल्पवृष्टि
सूचितकरताहै॥२१॥गाथा॥काइधंतोदीसइ॥अभेहिवहुविहहिरूवेहि॥अकवइबालविणासं॥हेमंतरणि
गयासस्सा॥२२॥भावार्थ॥सूर्यास्तऔर उदयसमययादिवादलटुकडेटुकडेकईरंगकेमालुमदेंतोनिश्चयब
च्चोंकीमृत्युऔरपानीकीनाउम्मेदीसूचितकरताहै॥२२॥गाथा॥चंदोसरूप्पसरीछो॥यसारिसणुविउगहयल

निमित्त० ॥५॥

मि॥ जयदीसयतस्स फलं॥ भणामि इ तो णिमामेहा॥२३॥ भावार्थ॥ अब आगें चन्द्रचिह्न कहते हैं चंद्रमां का रू
खवकर शुभाशुभ फल कहनें का ज्ञान अब कहते हैं॥२३॥ गाथा॥ णावा लंगलसरिसो॥ दक्खिणउ
दो॥ जुगदंडधनुसरिसा॥ समसरितमंडलो नो दु॥२४॥ भावार्थ॥ बालक चंद्रमां उदय होताकु आपनिपदाय
तीयाका धनुषाकार दक्षिण उत्तर समांन होतो सुभिक्ष करता है॥२४॥ गाथा॥ अवलंबियसीसधरो॥ रूक्खय
लक्कणो चंदो॥ णावाइ कुणयवरिसं॥ सुभिक्ख दइ हलसरिसो॥२५॥ भावार्थ॥ शुभ वृक्षसम चंद्र
पानी वरषानें वाला और सुभिक्ष करता है॥२५॥ गाथा॥ आरोगं दक्खिणवो जुगसंपत्तिजुगस्स सा णाया दंड
दंडसरिसे॥ धणुसरिसो सहरो जुस्सा॥२६॥ भावार्थ॥ दक्षिणदिशा जिसकी ऊंची हो किनारी वह आरो
ग्य करता है समान किनारेवाला संपत्ति करता है सपारलकडीके आकार चंद्र होतो मनुष्यां का हरतरह
दंड देता है॥ धनुषाकार चंद्रमां समह होता है॥ गाथा॥ विप्पाणं दइ भयं वा हिरस्सो नहा निवदइ मे
सं॥ धूसरवण्णो यवइस्सानं॥२७॥ भावार्थ॥ अगर चंद्रमां लाल रंगका दिखाई देतो ब्राह्मणों को भयका कारण है॥ ॥५॥

गा॥ पीलात्तनियोंकानाशकरताहे। वासीवैश्योंकोभयकरताहे॥ ३८॥ गाथा॥ किण्हो सुद्दविणासो॥ चिंतल
वस्सोयहणपयपयईउ। दहिखीरसंखवस्सो॥ सबम्हियपाहिदो चंदो॥ ३९॥ भावार्थ॥ कालाचंद्रमांशूद्रोंको-
विनाशकरताहे। पचरंगादहीकेरंगवाला। दूधकेरंगवाला चंद्रमांकुलदूधकेदेनेवालेपशुओंकानाशकर
ताहे॥ ३९॥ गाथा॥ रिखम्मिपासवबहरो॥ रोहिणिमरूपयपदयचंदो॥ सोकुणइपयविनासं॥ मंचमसासेणसं
देहो॥ ४०॥ भावार्थ॥ चंद्रमांके गिर्देखंडितमंडलाकार दिखाईदेतो पांचवेंमहीनेंजरूरदूधकानाश होगा
४०॥ गाथा॥ जेमंडलायपछिया॥ सूराशशिणायतित्तियचिवा॥ वरसुप्पाइनिमित्तं॥ तेसबेहुंतिणायबा॥ ४१
भावार्थ॥ जोजोचिन्हमंडलवगेरहकेसूर्यचंद्रके पीछे कहगयेहैं वहनिमित्तअवश्यहोतेहैं॥ गाथा॥ पबणि
रहिउचंदो॥ राहूणायगोछिनुपयामिज्ज॥ सोकुणइदेसपीडं॥ भयंचरणाणिवेदसि॥ ४२॥ भावार्थ॥ जो चंद्र
मांपर्बरहितहो परंतुराहुग्रसाजैसामालुमदेतोएसाचंद्रमांदेशपीडाऔरभयकासूचकहे॥ ४२॥ गाथा॥ मे
हाणयजेएवा॥ जेभणियापढमसूरजोयस्स॥ तवियससिणोसबे॥ णायबावस्सतूवेण॥ ४३॥ भावार्थ॥ व

योंके लिये जो चिन्ह सूर्यके पहले कह आए हैं उन्ही चिन्होंसे चंद्रमांसेभी काम लेना चाहिये ॥४३॥ (उप्पातव
॥गाथा॥ अह अंतरिकखसद्दो सुव्वइ रुयाणव वपुरिसाणं पंचममासे मारी॥ होइ इदेसो न संदेहो ॥४४॥ भा
वार्थ॥ अब उत्पातोंका वर्णन करते हैं जहांपर बहुतसे आदमियोंकी आवाज सुनाई दे और वह नजर नहीं
आवे तो जानलो कि यहां पांचवें महीने मरीकी बिमारी होगी ॥४४॥ गाथा॥ अरु बहु घनिधावंति सव्वहो उ
मनुस्सवहंति॥ एवाएव कुणंता॥ भूपालोय मनासाया ॥४५॥ भावार्थ॥ जहांपर बहुतसे मनुष्योंके दौडनेकी
र लडनेकी आवाजें मालुम हों और रुदन करतेहुए शब्द सुनाई दें तो जानलो कि यहां हजारों मनुष्योंका ना
श होगा ॥४५॥ गाथा॥ संझावेला समये रुवपसिवा चउद्दस गामपासेसु कहदिग्गा सुपादारव्वो विणा
संदेहो ॥४६॥ भावार्थ॥ संध्यासमय यदि शिवाल जो भडी विशेष चोफेर गांवके रोवे तो जानलो कि राजाका
नाश होगा ॥४६॥ गाथा॥ मज्झेणेपर चक्कं संझायेकुणइ रोयवाहि भयं॥ नासंसु सिवाकालेण विंतो सोहनारनो
४७॥ भावार्थ॥ अर्द्धरात्रिको परचक्रभय करती श्यामके वक्त सियार रोगव्याधि भय करते हैं और वाको जि

करावैकोईनुकसाननहीं॥४७॥गाथा॥अहतूरवोसुबइअनाहवोजम्मिकम्मिदेसम्मि।तहेसेजुअभयंहो
ही।घोरंनसंदेहो॥४८॥भाषार्थ॥ जिसदेशमैंकोलाहलशब्दसुनाईदेयाकरे उसदेशमैंघोरयुद्धअवश्यहो
गा॥४८॥गाथा॥अहजधधुवोचलदी।चालिज्जंतोविणिच्चलोहोइ।होइतस्सविणासो।गामस्सयतीहिम
सहि॥४९॥भाषार्थ॥जहांपरध्रुवचीजैंचलायमानहोजावैं।औरचलायमानचीजैंअचलहोजावैंतोउसगां
वकातीसरेमहीनेंनाशहोजावेगा॥४९॥गाथा॥णाणावइनमणा।वज्जंतिअताडियाचउद्दिसासुतहेसगा
मा।वरपुरिसंणाणसंदेहो॥५०॥भाषार्थ॥जिसगांवकेइर्दगिर्दकेईकिस्मकेबाजोंकीआवाजैंसुनाईदेंतोउस
पुरीकानाशहोजावेगा॥५०॥गाथा॥अहिजुनावियसयडाअवचंतिणउट्ठियाचिवबंति।वित्तंतिगामघाद
भयंचरणोणिवदेहि॥५१॥भाषार्थ॥सर्पजुनरूवैहैंजिसमेंएसीगाडीगांवकीतरफआतीहुईदिखाईदेंतो
जानलोकिइसग्रामकेवास्तेभागआये॥५१॥गाथा॥जूवाहलोविदीसइणच्चंतोखित्तमज्झयारम्मि।होइण
यरविणासो।परचक्काऊणसंदेहो॥५२॥भाषार्थ॥बिनाबैलोंकाहलआपसेआपखेतमैंखडाहोकरनाच

नेंलगेंतोजानलोकिपरचक्रकाभयहोगा॥५३॥ गाथा॥ णाणादुमउप्पणीयदि॥णीयतोजइपडेदिभूमीए॥–
तोअवकस्समाविभयं॥नगामेणच्छिसंदेहो॥५३॥भावार्थ॥ विनाहवावगेराकेकोईपेडगिरपडेतोवहांपरम
रीकीबीमारीजरूरहोगी॥५४॥गाथा॥णयरस्सरच्छमज्झे॥साणारोवंतिणुद्धतुंडाणं॥होईणयरविणासो॥परच
काऊणसंदेहो॥५४॥भावार्थ॥शहरकेमध्यमेंअगरकुत्तेऊंचामुंहकरकेरोवेंतोयहबनलातेहैंकि·परचक्र
सेनगरकाअवश्यनाशहोगा॥५५॥ गाथा॥णम्मियदित्तंकं॥कालज्जइविदोसयजच्छ॥रायविणासोहोही॥
परचक्काऊणसंदेहो॥५५॥भावार्थ॥शहरमेंपुरुषकंकालहड्डियोंकापुरुषाकारजैसेंमालुमदेंतोजानलोकि
परचक्रसेराजाकानाशहोगा॥५५॥गाथा॥अमिगपक्वीगामे॥णायरेयजच्छुदीसंति॥होहीणयरविणासो
परचक्काऊणसंदेहो॥५६॥भावार्थ॥अमिषभत्तोपत्तीबिनाकारणजहांबहु नापनसेउडतेहुवेनजर
आवैंतोवहांजरूरपरचक्रसेनगरकानाशहोगा॥५६॥गाथा॥अहवालाकीलंता मिलियाजइसब्बदेसि
धावंता॥जुझंतिपुणोसब्बे॥तयज्जविजुझंतिणोयब्बो॥५७॥भावार्थ॥जहांपरबच्चेखेलतेखेलतेआपसमेंल

डारेसुरूकरके को धमेमिडेलोंमानले कि यहांजरूरसुद्दहोगा॥५७॥गाथा॥गोहाणिनेकुणंतंत्रगिला
यंतिबहुरमंति॥नम्मियगामेअगो॥पंचमदियहीणसंदेहो॥५८॥भावार्थ॥बच्चेघरोंमेखलनेकेलियेआग
लेलेकरआवे औरउसमेंखलैतोपांचवेंदिनजरूरउसगांवमेंआगलगेगी॥५८॥गाथा॥अहकोलमाण
चोरंनवाउपासबदोयधावंति॥तइयम्मिनबादियहे चोरस्सभयंमुणोसव्वं॥५९॥भावार्थ॥जहांपरबच्चे
लेतेखलतेयहचोरआयापकडोवगैरहशब्दमुंहसेनिकालैतोतीसरेदिनचोरभयहोगा॥५९॥गाथा॥अह
माणुसोपंगाइसहछिणिघोडियायमुणहोणा॥पससंक्षबदाईदेसविणासंणिवंदंति॥६०॥भावार्थ॥जहां
परमनुष्यगातेहोंवधानांचुननेकोघोडीहीधनी औरकुतियाआकरचुननेलगैतोसमझोकि उसदेशका
नाशहोगा॥६०॥गाथा॥अहमाणसीएमासगावीएहायपकवणकेण॥छम्मासेणयघोडीवरिसेणय
हत्थिणीकुणइ॥६१॥भावार्थ॥जहांपरपंद्रहदिनघोडीयाहथिणीगानाचुनाकरैतोयहमरीनामेंघोडी
औरएकसालमेंहथिणीदेशनाशकरैगी॥६१॥गाथा॥मुणहोपणमासेहिंजइपसवइतोवियाणउप्पा

देसागामविणासंएगाछठेमासेपकुव्वंति॥८०॥भावार्थ॥ अगरपांचमहीनेतकयहहोवेनोपशुगानासुननेमेंहोतोछ
ठेमहीनेंजरूरग्रामकानाशहोगा॥८१॥गाथा॥जत्थवलएहिंगीदड कुक्कुरामूसएहिमज्जारो॥पिवियएएपणिम
तं॥गावविणासंणिणायव्वो॥८२॥भावार्थ॥जहांगीदडकुत्तेका और चूहाविल्लीकोमारलगादेवहांके देशका
जरूरनाशहोगा॥गाथा॥जियसुक्कोवियरुक्खो उव्वहमाणोयदीसएजत्थ॥गामेवाणयरेवानत्थविणा
संनिणायव्वो॥८३॥भावार्थ॥जहांसूखापेडउखडलादिखाईदेवेतोउसग्रामकापुरकाअवस्यनाशहोगा॥८४॥
गाथा॥गामेवाणयरेवाजइमिसइबहुविहायवासिसांइवसमंसपूयवसिसं तिन्नसपच्चएहिंवा॥८५॥भावा
र्थ॥ग्राम नगरमेंजहांवर्षासंबंधीउत्पातहोवेंहैं जैसेंलोहूकीवर्षा मांसकीवर्षा घीकीवर्षा तेलकीवर्षा उ
नकेफलोंकोकहतेहैं॥८६॥गाथा॥मारीहाइघोरा जत्थहेएहातिवासिसउप्पाया॥तहमेवजिनहा कालपम
णंवियाणिज्जा॥८८॥भावार्थ॥जहांऊपरकहीहुईवर्षायेंहोंवहांघोरमरीकी बीमारीहोतीहै॥८९॥ ॥
(आगेंइसकीअवधिवतलातेहैं)॥गाथा॥मेसाऊमासेणं दमासमेनिपत्तणापवो॥ फग्गसापथ्थमासंघि

यतिछत्तमत्तरतेणा॥६७॥ भावार्थ॥ अगर मांसकी वर्षा होतो एक मासमें और खूनकी वर्षा होतो दो मासमें वि
ष्ठाकी वर्षा होतो छह मासमें और यदि घी तेलकी वर्षा होतो सात दिनमें ही फल करती है॥६७॥ गाथा॥ परचक्क
भवाघोरे मरी वा लछुहोइ देसम्मि। रसस्सविणासो वा देसविणासो य णियमेण॥६८॥ भावार्थ॥ यह उत्पात प
रचक्रभय या घोरमरी राजाको मृत्यु या देशनाश आदि भय करते हैं॥६८॥ गाथा॥ असमहकालवल्ली फुल्लंती म
हणुवमुणे याणं सरुद्दा असुद्दी सइंद सविणासो ण संदेहो॥६९॥ भावार्थ॥ अकालसमय लतां फूलों-
और वृक्षोंसे खूनकी धारा निकलती दिखाई दे तो अवश्य देशका नाश होगा॥६९॥ (उत्पातयोगसमाप्ति)
गाथा॥ तिउर छत्तभंगे रहभंगे पायहथ्थिरभंगे भामंडलस्स भंगे सरीरभंगे तह य चेव॥७०॥ गाथा॥ एएदेस
स्सपुरस्स चलरोत्तह णाहणायणिगामस्स जहकुत्तियनदोसा तसवकनइस्सामि॥७१॥ भावार्थ॥ और वह
जिस देश नगरमें प्रतिमाजी स्थिर या चलनेमें भंग होजावे उनके शुभाशुभ फलोंको कहताहूं॥७१॥ गाथा॥ छ
त्तस्सपुणो भंगो॥ एगवइ भंगो रहस्स भंगेण॥ होइ एगरवइमरणं छठमासे पुरविणासो॥७२॥ भावार्थ॥ छत्र

भंगहोनेंसेराजाका ... नु ... कसानहो।रथकेटूटनेंसेराजाकामरणहो।औरछत्रमहीनेंशहरकानाशहोजावै॥७२
गाथा॥भामंडलस्सभंगो।णरवइवीडाय — होहइतइणमासे।अहवापुणपंचमेमासे॥७३॥भावार्थ॥भा
मंडलकेभंगहोनेंसेराजाकोतीसर्यापांचवेंमहीनेमरणांतकष्टहोगा॥७३॥गाथा॥हच्छत्तपुत्तोभंगोकुमारम
रणंचतइयमासेणं।पायस्सपुणभंगोजनपीडासत्तमेमासे॥७४॥भावार्थ॥प्रतिमाजीकाहाथटूटनेंसेतीस
रेमहीनेंराजकुमारकीमृत्युहोगी।औरपांवकेटूटनेंसेसातवेंमहीनेंमनुष्योंकोकष्टहोगा॥७४॥गाथा॥एव
हंसचलिए।यववइयाणंवियाणपीडइ।णायरस्सहवइपीडा।णट्ठंतीतइयमासेण॥७५॥भावार्थ॥अगरप्रतिमा
जीआपसेआपचलायमानहोजावैतोमनुष्योंकोऔरराजाकोअचानककष्टहोगातीसरेमहीनें॥७५॥गाथा॥
णरवइपहाणमरणं।सत्तममासेणहवइसिरभंगो।चउवसस्सपुत्तो।जणवइपीडाहवइघोरा॥७६॥भावार्थ
यदिप्रतिमाजीकामस्तकभंगहोजावेतोसातवेंमहीनेंराजाकेप्रधानकीमृत्युहोगी।भुजाकेटूटनेंसेमनुष्योंको
घोरपीडाहोगी॥७६॥गाथा॥पडिमाविणिगामेणाय।रणामरणंचचोरअग्गिभयं।जायइतहसमासे।पडिएपु

गालक्कइ पडणं॥७७॥भाषार्थ॥प्रतिमा जो से आग निकले या सिंहासन से गिर पडे तो जानलो कि तीसरे महीने
राजा की मृत्यु अग्नि और चोर भय होगा॥७७॥गाथा॥जइ पुणरोए मव्वा पकव अंतरेण उप्पाया॥जायंति तयामि
प्पा दुब्भिक्खभयं निवेदंति॥७८॥भाषार्थ॥जो ऊपर बतलाये हुवे उत्पात पन्द्रह दिन तक बराबर होते रहैं तो
जरूर बहुत जल्दी दुष्काल का भय होगा॥७८॥गाथा॥देवान्नं चेति जिहं पडिमा ज्जं तीय तहय रोवंति जय धूमं
ति चलंतिय हसंति वा विविह रूवेहिं॥७९॥भाषार्थ॥यदि देवप्रतिमा नाचने लगे जो अग्निकाले या रोवने लगे धू
मने लगे चलने लगे हंसने लगे और कई प्रकार के भाव दिखावें तो॥७९॥गाथा॥लोयस्स दिंति मारिं दुब्भिक्खं त
ह य रायपीडं च॥चिंतंति हा पावं पुरस्स नहणाय रायस्स॥८०॥भाषार्थ॥जान लो कि मनुष्यों को मरी का रोग
दुष्काल शहर के लोगों को और राजा को कई तरह से कष्ट होगा॥८०॥गाथा॥रुइ रोएण रसमरणं हसियेन पदेसवि
ब्भमो होइ॥चलिएण कंपिएण य संगामो तच्छणा य बो॥८१॥भाषार्थ॥प्रतिमा के रोने से राजा की मृत्यु का सूच
क है हंसने से देश में विद्रोह होगा॥प्रतिमा का चलना और कांपना बतलाता है कि यहां संग्राम होगा॥८१॥गाथा

निमित्तशा०
॥१९॥

पसिद्ध सेन हवाही॥ धूमेणय वहु विहाणि रायाणि॥ वंभायवियाणा साहु झुपराण सणं कुणइ॥८०॥ भावार्थ प्रति
माके धूआं युक्त पसीनें का निकलना कहीं न हो से फल वन जाता है॥ यदि शिव की प्रतिमा से एसा होतो ब्राह्मणों का ना
श होगा॥८१॥ गाथा॥ वणियाण व कुवेरु खंदो पुण भो इय विणासेइ॥ कायथाणं विसहो॥ इंदोरसं विणासेइ॥८
॥ भावार्थ॥ कुवेर की प्रतिमा से धूआं युक्त पसीना निकलै तो भाइयों में तवाही आजायगी॥ और हाथियों में धूआं
निकलै तो कायस्थों में संकट होगा॥ इंद्र की प्रतिमा से एसा होतो राजा का नाश होगा॥८२॥ गाथा॥ भोगवइ णाक
मो॥ किस्मो पुणासठ लोय पणाणायपरो॥ अरहंत सिद्ध वुद्धा जइणा मा संघ कुवंति॥८३॥ भावार्थ॥ कामदेव की प्रति
मासे धूआं निकलै तो आगमवानों का नुकसान होगा॥ और यदि कृष्ण की प्रतिमा से एसा होतो संपूर्ण जाति के म
नुष्यों का नुकसान हो॥ यदि अरहंत सिद्ध और बौद्ध की प्रतिमासे एसा होतो जातियों का नाश होगा॥८३॥ गाथा
कुव्वाइन कुसिया॥ चंडिया य पहसंति सव्व महिलाणं॥ उयमालिया य पहणइ॥ वाराही हणइ हच्छीणं॥८४॥ भाषा
र्थ॥ चंडिका देवी के वालों से यदि एसा होतो स्त्रियों के नाश होने का हेतु है॥ और वाराही देवी हाथियों का नाश क

॥१९॥

रतीहै।८४।गाथा। [illegible] णाइणि
गब्भविणासं करेइ पइणा।णा।णा सयरो॥ए देजेसिय पुना॥ अपुहं कुवं तित सुमया॥८५॥भावार्थ॥नागनीके
वासे धूम्र निकलैतौ गर्भनाश और म नाशदोषकरतीहै॥यहजोजोवातैं वतलाई हैं निश्चै अशुभकरतीहै
८५॥गाथा॥जइ सिवलिंगं फुट्टइ अग्गी जालं व मुठफुलिंगं॥वसतिद्ध रुहिरं वा हमइ तो जाणए प्पा यंप
भावार्थ॥ यदि शिवका लिंग फूटै और उसके अंदर अग्निकी ज्वाला उठैया खूनकी धारा निकलै उसका फल
वतलाते हैं॥८६॥गा॥फुडिएण पंतिभेऊ अग्गी जाले सदेस णासो यं॥ वसतिद्ध सहि धाराकुणंति सयंएण
रवइस्स॥८८॥भावार्थ॥ शिवलिंग फूटनेसे आपससे फूटपड़जावै और अग्निकी ज्वालासे देशका नाशहो
जावेगा॥खूनकी धारामे घरघरा नाहोगा॥८८॥गाथा॥मासेहिं तीणहिं नूवं दसंति अप्पणा सवा जइ णाविको
रहपूया॥ देवाणं भत्तिराएणं॥८९॥भावार्थ॥ असे असे उत्पातोंके होनेही मनुष्योंको चाहिए कि तीन मास
तक भक्तिसंयुक्त देवोंकी पूजन करै ८९॥गाथा॥मच्छेहिं गंधधूवेहिं पुजावलि वरुपयारदेवेहिं नूसंतिबंदे

नशा०

१४

वा॥ सतितणुं निवेदिंति॥८७॥ भावार्थ॥ पुष्प गंध धूप दीप नैवेद्य वगैरासे देवोंकी पूजन करो॥८७

याविणासं करंति तह पूइया अपूइहिं देवा निच्चं पूया तम्हा पुणसो इह णाभणिया॥८८॥ भावार्थ॥ देवोंका अ

मानजु कसानका हेतु है इसलिये देवोंको कभी अपूज्य नहीं रक्खे और राजा ना पूजन करे इसहीमें भलाई है॥८८

गाथा॥ णय कुव्वंति विणासं णय रोये य ण दुःख संतावं देवा विआइ विरुधा हवंति पुण पूइय संता॥८९॥ भाषा

र्थ॥ देवोंके संतुष्ट हुए वह विनाश नहीं करते और दुःख संताप कभी नहीं देते इसलिये शांति इच्छुक पुरु

षोंको हमेशा पूजन करना चाहिये॥८९॥ गाथा॥ छत्तो तुज्ज लइंतो जइ पढइ णाव वइ स्सयासम्मि अहपंचम्मि

दिवसे णरवइ णासु निणायव्वो॥९०॥ भावार्थ॥ छत्र चमर टूटकर आपसे आप राजाके पास पडै तो पांचवें दिन

जरूर राजाकी मृत्यु होगी॥९०॥ गाथा॥ अहणं दिन्नूरस कवा वज्जंति अनहया विफुदंति अहपंचमम्मि मासे ण

रवइ मरणं च णायव्वो॥९१॥ भावार्थ॥ जहां ढोलक तुरंग तुरई शंखके बजनेको आवाजें कानमें सुनाई देती होतो

वहां जरूर पांचवें महीनेमें राजाकी मृत्यु होगी॥९१॥ गाथा॥ चावं मुसली सत्ती सत्तीण अंताण वर ज च्छुरी संति

॥१४॥

अहपंचमम्मिमासोणरवइणासुत्तिणायव्वो॥८५॥भावार्थ॥जहांमूतसेलहडतेज त्तादिखाईदेवहांजरूरपांचवेंम
हीनेंराजाकीमृत्युहोगी॥८५॥ गाथा॥याकोटयारस्सपरदारोदेवजुलं पजुप्पइयरायगिहो॥अहतोरणयइंदो
गिद्धसम्मसोहणंणो ऊ॥८६॥भावार्थ॥यदिनगरकोटपरयानगरकेदरवाजेपरदेवमंदिरपरयाचौराहेपरय
राजमहलपरयत्तोंकाल्हठतेनाचतेदेखेतोनिम्नोक्तफलजानो॥८६॥ गाथा॥पायारबालवहो तोरणमज्झेय
गब्भयाऊय॥गायसालअस्समाले कुणइवहंमाहणस्सतया॥८७॥भावार्थ॥कोटपरनाचनेंसेबच्चोंकानुक
सानादरवाजेसेस्त्रियोंकागर्भवतीहैंउनकानुकसानागऊशालायाघुडशालसेमारूकारोंकानुकसानहोगा
८७॥गाथा॥देवजुलेविप्पवहो॥रायगिहेरायणासणंकुणइ॥शङ्कधयम्सुयपडिवो॥पुरस्सणासंणिवेदेइ॥८८
॥भावार्थ॥देवमंदिरसेब्राह्मणोंकोतकलीफहो॥राजमंदिरसेरा जाकामरणहो॥औरचौराहेसेशहरका
नाशहोनाहै॥८८॥गाथा॥आइच्चाजइछिद्दो॥अह अवकीसपदोसयमज्झे॥तोजानणयमरणं॥संगामोहोइ
वीरसेणा॥८९॥भावार्थ॥सूर्यमेंछेदसमालुमहोनेंलगें औरसूर्यकेमध्यमेंकुंजाकृतिमनुष्यवगैरहमालुमहो

भीएकसालमेंराजाकीमृत्यु ओरसंग्रामहोगा॥९९॥गाथा॥दिवसेनलुयहिंउंति सबनवायसउरयणीसु
रविणासंभयंचरयंणिवदोहा॥१०॥भाषार्थ॥दिनको उल्लू ओररातको कौवाबैनोशहरनाशभय
गा॥१०॥ अथइंद्रधनुषरूपप्रारंभः॥ गाथा॥ रत्तिम्मियइंदधनुजइदीसंयमेयणुकिलभासोकुण
ठभंगारणासविरोयपोडंचा॥१॥भाषार्थ॥ अबइंद्रधनुषस्वरूपकहतेहो अगरातकेवक श्वेतधनुषनजर
आवेतोजानलोकि यहांपरसंग्रामकरथभंगहोगे ओरमनुष्योंमेंकष्टहोगा॥१॥गाथा॥दीयहेदीसइधणु
सुव्वणयंदरिवणेणवामेण॥सोकुणइणीरणासंवायंचवमुचवमुचयवडुयं॥२॥भाषार्थ॥यदिदिनको इं
धनुषपूर्वमेंदक्षिणकोटेढामालुमहोतो जानलोकिखूबहवाचलेगी ओरपानीनहींबरसेगा॥२॥गाथा
च्छमभायपुणउत्तरमि चविसुवयअइवडुयं॥उत्तरउइवाअहवा दीसंतिणसोहणाधणु॥३॥भाषार्थ॥यदिपू
पश्चिमकोमालुमदेतोजानलोकि पानीखूबपडेगा॥ पूर्वसेउत्तरकोअगरधनुषदीखेतोभीअच्छाहै॥३॥गा
॥धणियंणइरावित्ता॥कायाकुव्वंतिमंडलंणिउ अमाहंति अग्गिदाहं चोरभयंचणिवरंता॥४॥भाषार्थ॥

वंदुठवणोयपुस्सो। जेदोसाहुंतिणयरमज्झम्मि। तेहुंतिणोइह्समदुव्वारिसदिणअंतरेणेयदं।।२५।।भावार्थ।।जोऊ
परधनुषकेदोषवनलायेहै वहकहांहीसमफोकि। जिसनगरमेंकि जिसराजाकेराजमेंनजरआतेहैं इनकी अवधि
दोसालतककै।।२५।।गाथा।।उठंतोजइवंकंपइपपिघोउभइवलइयाणमइं नोजाणहंवलमोहोरज्जअंसंचरण
संसं।।२६।।भावार्थ।।जोधनुषउठताहु आकांपतादिखाईदेकरभीलंबाकभीचोडासादिखाईदेतोजानलोकि
राज्यभयहोगा।।२६।।गाथा।।इंदोकोलविणाउं।मंतिविरहोदुपरियणोहोई।उठंतपुणपडइय।णरवइपडणं
णंवदेई।।२७।।भावार्थ।। अगरसीधावडामालुमदेतोमंत्रीऔरराजामेंविरोधहै।अगरधनुषउठताहु आदि
खाईदेताउसीवक्तगिरपडेतोराजाकाराजभंगहो।।२७।।गाथा।।भंगेणरवइभंगोफुडिएणयरोयपीडिऊहो
इपावगहस्सनुगहिए।जठंतोकुणइसंगामं।।२८।।भावार्थः।।अगरधनुषटूटताहु आदिखाईदेतोराजाकी
मृत्युहै।यदिविखरतादिखाईदेतोरोगपीडाहोगी।औरयदिअग्निनिकलतीदिखाईदेतोजानलोकिसंग्रामहो
गा।।२८।।गाथा।।जइसुंचइधूमंवा।अग्गिजालंचणुविउसंतो।तोकुणइरायमरणं।देसविणासंतुणायव्वं।।२९।।

॥भाषार्थ॥यदिधनुषसेधूआंउठता।औरचारोंतरफसेआगकीचिंगारियांउठतीदिखाईदेतोयहबनजाताहै
कि॰राजाकीमृत्युऔरबादमेंदेशकानाशहोगा॥१९॥गाथा॥वेढिज्जइएहिज्जइसुहुजालेहिंकोडणहिंवा॥तो॰
णमारिघोरा।जणमरोगंचदुःभिक्खं॥२०॥भाषार्थ॥मधुकेछत्तेकीतरहअगरनगरकोधनुषवेष्टितकरले
तोजानलोकिघोरमहामरीहोगी॥जिससेमनुष्यकष्टउठावेंगे।औरदुष्कालपडेगा॥२०॥गाथा॥इंदधयमाह
ढो॥सिंठोजइकुणइबहुविहारावं॥अक्कवइसोपुरभंगंचणायमरणं॥२१॥भाषार्थ॥अगरएककेऊपरएकइ
सतरहसेदोइन्द्रधनुषनजरआवैंतोजानलोकि॰मनुष्योंकोहरतरहसेखराबीहैऔरशहरकानाशभीकरेगा
॥२१॥गाथा॥एएपुणउप्पाया॥सव्वेणाम्संतिवारिसिदेसंति।पंचदिणअंतराओ॥अहवापुणसत्तरत्तेण॥२२॥भा
षार्थयहइन्द्रधनुषसंबंधीउत्पातपांचवेंरोजयासातवेंरोजअथवाएकमाह(वर्षके)अंदरफलदेतेहैं॥२२
गाथा॥यदिसोमाणिसुहा॥उठदिणुप्पादवज्जिदासंता॥रणोपुरासहाहदिवसमति[illegible]वंतम्मिदेसम्मि॥२३॥भा
षार्थ॥यदिउत्पातदोषवर्जितहोतोनृपतिकोशांतिकरनेसेदेशमेंशांतिहोजातीहै॥२३॥गाथा॥अहउत्तमेहिएण

या॥ वसाणिया सोहग्गं निणायवं॥ अहमे हि उत्तमा पुण। देस विणासं परिकहंति॥२१४॥ भावार्थ॥ उत्तम पुरुष उत्ता
नों को विचार कर देश विनाश का हेतु कहते हैं॥२१४॥ गाथा॥ जं इवालाहिडंता। भिकं व देहि त्ति सुकुणविंता। दुःभि
क्ख भय होइ। तं इसेण छिसंदेहो॥२१५॥ भावार्थ॥ जहां पर बच्चे खेलते खेलते रोने लगें और मुंह से कहें कि
भीष देओ तो जानलो कि अवश्य दुष्काल पडेगा॥२१५॥ गाथा॥ पुव्व उत्तरमग्गा। उक्का वा जस्स दीसए य थ पडा। त
स्स विणासो होइ। गामे णायरेण संदेहो॥२१६॥ भावार्थ॥ अब उल्कापात का बयान करते हैं। उल्कापात उसे कह
ते हैं जो कि आकाश में चमकती हुई चिंगारियों को लंबी शिखा बन जावे। पूर्व और उत्तर दिशा में अगर उल्का
नजर आवे तो उस नगर का अवश्य ही नाश होगा॥२१६॥ गाथा॥ उक्का पंच जलंती। मासे मासे सु सब्बकाल छु
छुम्मासं पडमाणं। नयो प्पाणं णिवेदेइ॥२१७॥ भावार्थ॥ जहां पर हर महीने उल्का नजर आवे इस तरह छ
ह माह तक उल्का दीखे तो अवश्य उस जगह के मनुष्यों के प्राण जायगे॥२१७॥ गाथा॥ सुक्किआ धूमा। भाजइवा
णा आपधूसरा उक्का। पडमाणी दिसिज्जा। णं। हमित्तं जाण उप्पादं॥२१८॥ भावार्थ॥ सुक्का होगे इविप्पा। रत्ता पुण

पीयाहणोइवस्सो किण्हपुणसुद्दंसायपरी॥२२४॥भावार्थ॥सुफेदउल्का ब्राह्मणों
लउल्का क्षत्रियोंकोमृत्युदेतीहै।पीलीउल्का वैश्योंकानाशकरतीहै।औरकालीउल्का शूद्रों
रतीहै॥२२५॥गाथा॥चित्तलयंनिहणं वाहिंमारिचनाणकोवेइ सामासम्मिपडंती।साहण
एई॥२२६॥भावार्थ॥चित्रांगीउल्कामरीकीवीमारीकरतीहै।औरजोइधरउधरसेरुकराहै वहप्राणनाशक
२२७॥गाथा॥मज्झणियसंज्झाय वायग्गिभयंणिवेइपडंती॥अह अप्प वेलदिट्ठा।नुक्कारण्णमयरा
॥भावार्थ॥संध्यासमयकी औरअधेरात्रिकी उल्काहवा औरअग्निभयकरतीहै।औरसूर्योदयकेपहली
निनाशकरतीहै॥२२९॥गाथा॥पडमाणी णादिट्ठा धुवसुवक्खस्सणासणीउक्का॥अंगाररणजुत्ता अ
दाहंणिवेदेइ॥२३०॥भावार्थ॥जोउल्कापडतीहुईनजरआवेतोसुवर्णकानाशकरतीहै।औरजोउल्का अं
तोअग्निदाहकरतीहै॥२३१॥गाथा॥अहसुक्के णयजुत्ता।उद्धाजइपडइकहवपजलंती॥
कणुकंडसुवसाणिवेएई॥भावार्थ॥शुक्रोदयमेंउल्काजलतीहुईनजरपडैतोरसकेभाड़े

का नाश करती है। और खुजली की बीमारी पैदा करती है॥२२॥ गाथा॥ राहूणविसयघादं जलणासयरी हवे
उक्का॥ ॥२३॥ भाषार्थः॥ राहू के उदय में उल्का गिरे तो पानी का नाशक
रती है॥२४॥ गाथा॥ पच्छम्मिजम्मपडिया॥ तम्मघोरा हवेइ उणाणी॥ इंदिद्दिसाय सुपडिया॥ खेमसुभिक्खं वणि
क्करेदि॥२५॥ भाषार्थ॥ पश्चिम दिशा में पडी हुई उल्का घोर पीडा करती है। और उत्तर दिशा में पडी हुई उल्का कु
शल और सुभिक्ष दाता होती है॥२५॥ गाथा॥ अ गोइय अग्गिभयं जम्माएणासासयंजयाणी॥ अहवारइ
पडिया। दव्वविणासं णिवेदेइ॥२६॥ भाषार्थ॥ अग्निकोण में आर उल्का पडे तो अग्निभय करती है। और दक्षि
ण दिशा में पडी हुई उल्का पीडा संताप पैदा करती है। नैरृत्य कोण में पडी हुई उल्का द्रव्य नाश करती है॥ गाथा॥ अ
हवा रुणीय पडिया। वरिसं वा पंचवरुणा वरए वायव्वरोयभयं। सोमा पुण सोतया होई॥२७॥ भाषार्थः॥ नी
चे या ऊर्द्ध चलती हुई उल्का पानी की वर्षा और हवा लाती है। वायव्य कोण की उल्का रोगभय करती है। परंतु अ
गर उल्का वायव्य कोण की होतो शुभ है॥२८॥ गाथा॥ ईसाणाए पडिया॥ वादंग बम्भकुणइ महिलाणं॥ दि

मुयपडिया॥भयजणणी दाहणी उक्का॥१८॥भावार्थ॥ईशानकोणको पडो कुई उल्का त्रियांका गर्भनाशक
॥और अगर पूर्वमें उल्का पडे तो घोर भय उत्पन्न करती है॥१८॥गाथा॥सूरम्मि तावयंतो॥पुहवी तावइ णिव
याणुक्का॥सोमपुणासोमसुही॥खमसुभिक्खंकरी उक्का॥१९॥भावार्थ॥यदि उल्का आदित्यवारको पडे तो प्र
मगर मी संबंधी आदिक पीडा होवे॥और अगर चंद्रवारको गिरे तो कुशल सुभिक्ष करती है॥१९॥गाथा जम्म
रिक्ख पडिया॥तस्स वयसो हणं वकुकुणइ॥अमस्स किकुणइ भयं॥थोवंथोवं णसंदेहो॥२०॥भावार्थ॥जो उ
पात जहांसे उठा है॥और वहीं वापिस लौट जावे तो अच्छा है वरना अवश्य वार वार तकलीफ देता है॥२०॥गा
॥कि नियरोहणिमझे॥पडमाणी कुणइ पुहइसंतावं॥डहइय पुरगामाई॥णयमिहं णच्छिसंदेहो॥२१॥भावार्थ
रोहिणी नक्षत्रमें अगर उल्का पडे तो पृथ्वीको संताप देती॥और शहर या ग्राम पर राज्य महलको नष्ट
है॥२१॥गाथा॥चोराउप्पंति महो॥राइकुलाप पयाचिलुपयाकुति॥विलयंति पुत्तदारा॥पापविणस्सतेनहो
॥२२॥भावार्थ॥और चोरोंका जोर जमीन पर ज्यादा हो जावेगा॥हगवढ जावेंगे॥माता पुत्रको और स्त्री पतिको त्या

गदेगो॥२३॥ गाथा॥ इंदोवीसमेदं सरसाणविणासणो हवइ लोए। इयजुप्पापणिमित्तं जाणेयबंचपयत्तेण॥२३

भावार्थः॥ पानीकमपडेगा। नाजवगेरहसरसोंकानाशहोगा। यहउत्पातइसतरहकी उल्कापडनेसेहोताहै॥२३

गाथा॥ पुव्वदिसम्मियभाए। दीसइगंधव्व णिहणायरा॥ पच्छिमदेसविणासो होहइतच्छवरणयबो॥२४

॥अबगंधर्वनगरफलकहतेहैं। गंधर्वनगरउसेकहतेहैं जोआकाशमेंपुतलाकारनगरकेस्वरूपबने। अगरपू

र्वेदिशामेंपुतलाकारनगरकेस्वरूपबने। अगरपूर्वदिशामेंगंधर्वनगरदीखतोपश्चिमदेशकानाशहोगा॥२४॥

॥गाथा॥ दक्खिणदिसम्मिदिट्ठो रायाणविणासणोहवइणियमेण। अहपच्छिमणदीसइ हणइपुणपुव्वदेसाइ॥२५

॥भावार्थ॥ यदिदक्षिणदिशामेंगंधर्वनगरदीखतोराजाकानाशकहै। औरयदिपश्चिमदिशामेंदिखाईदेतो

पूर्वदिशाकानाशजल्दीहोगा॥२५॥ गाथा॥ णरणारियाणं णयराण विणासणोहवइदिट्ठो। हेमंतोरायभ

यंवसंतमासेसुभरकयरो॥२६॥ भावार्थ॥ उत्तरदिशामेंदिखाईदेतो उत्तरकीदिशावालोंकानाशकरताहै। और

यदिहेमंतऋतुमेंदिखाईदेतारोगभयकरताहै। बसंतऋतुकादेखागंधर्वनगरसुकालकरताहै॥गाथा॥गीष्मेण

नशा० घ्रा जावै

णयरघादी॥ पाउसकाले असोहणो दिट्ठो॥ वरिसासयदुब्भिक्खं मरणपुणवहि पीडयरो॥२७॥ भावार्थ॥ मरुतुका देखा हुआ नगर नाश करता है और वर्षाकाल में गंधर्वनगर दीखै तो पानी कम होगा॥ यदि शरद ऋतु में दीखै तो मनुष्यों को पीडा करता है॥२७॥ गाथा॥ रिउकालम्म ऊणे सो णयरको हिंडमाण णवस्स मज्झम्मे रायाणं छम्मासेसो विणासेई॥२८॥ भावार्थ॥ वा को ऋतुकाल में अगर एसा हो यानें गंधर्व नगर दिखाई दे तो उनका फल छह महीने में नर राजा का नाश होगा॥२८॥ गाथा॥ दंतेसं सो नासदि जछपहिंडं तिदी सण राइ पच्चूसे चोरभयं णरवइणासं च पुणराहू॥२९॥ भावार्थ॥ रात्रि को नजर आवै तो देशनाश करैगा कुछ रात्रि रहे नजर आवै तो चोरभय और राजा का नाश करता है॥२९॥ गाथा॥ अणकालम्मि दिट्ठो सुभिक्ख रोगउवहद्दसयघो॥ जइ मंवम्मदोषशहुडइ अणे यायविस्स्यार॥३०॥ भावार्थ॥ यह ऊपर जो काल नियत करे हैं उनके सिवाय अगर कोई काल में गंधर्वनगर नजर आवै तो सुभिक्ष करता और रोग हरता होता है अब जिस वर्ण का गंधर्वनगर फलन का नाश करता है यह बतलाते हैं॥३०॥ गाथा॥ वित्तलवा भयजणणो सामाराय

स्ससंभवा होई॥ घियतिल्लखीरघारी॥ मुक्किलउ होयनोयस्स॥४४॥ भावार्थ॥ पंचरंगागंधर्वनगरभयकर्तीत्रे
रोगभयकरताहै। श्वेतरंगकाघी·तेल·दूध·कानाशकरताहै॥४४॥ गाथा॥ विग्गहोवछ्विणासो॥ नोपुणउदय
णासणोभणिओ॥ अरकालरत्तवस्स॥ दीसंतअसोहणोणयरो॥४५॥ भावार्थः॥ कालेरंगकावस्त्रनाशकरताहै
अग्निकालनकलालरंगकागंधर्वनगरदिखाईदेतोज्यादाअशुभहोताहै॥४५॥ गाथा॥ णदीसणएवा॥ णयरे
असुहावहसुणायबा॥ जम्मिदिसंदीसिज्जा॥ तम्मिदिसंतनुणायबा॥४६॥ भावार्थ॥ यहगंधर्वजिसशहरमेंनज
रआवेतोउसहीमेंअशुभहोताहै। औरजिसदिशामेंदिखाईदेतोउसहीदिशामेंनुकसानकरताहै॥४६॥ गाथा॥
अहोरकमज्जवत्तोहो॥ थायंतोनारयाणिवहुयाणि॥ सोमज्जदेसणासं॥ कुणइपुणोणत्थिसंदेहो॥४७॥ भावार्थ
यदिवोचमेंआकाशकेतारोंकीतरहगंधर्वनगरछायाहुवानजरआवेतोमध्यदेशकोअवश्यनाशकरताहै॥४७॥
॥गाथा॥ णयंतेणउवत्तो॥ णयंतविणाउहवइदिठ्ठो॥ पच्चंतदेसणासं॥ वाहोमरणंचदुब्भिक्खं॥४८॥ भावार्थ॥ जि
तनोदूरतकफैलाहुआगंधर्वनगरनजरआवेतोउतनोदूरतकदेशनाशअवश्यकरेगा॥४८॥ गाथा॥ इंदपुरए

सव्हिअादीसइजइपुकरोयहिडंतो॥ चिंतेइदेसनासंवाहीमरणंचदुभिक्खं॥४६॥ भावार्थः॥ इंद्रधनुषाकासरंग
बेरंगके आकारयहिंगंधर्वनगरनजर आवेतोदेशनाशव्याधिमरणआरदुर्भिक्षअवश्यकरेगा॥४६॥ गाथा
इजयमहेणं॥पबयमितेणवाबहुपयारेणं॥ छिंदेकुलजछदीसइणयविरणासोहवेणियमा॥४७॥ भावार्थ॥ आ
कंउपरनगरके आकारगंधर्वनगरवनजावे आरउसके चोफेरुकोटघिरादिखाईदेतो निश्चयराजाकामृ
हो॥४७॥ गाथा॥ फलकाणारूपं॥उप्पलयासायपडणं॥उप्पायणिमित्तनकारणंच्छाणं॥जइउपलयापडंत॥
विहरूवहिसवुछा॥४८॥ भावार्थः॥ पत्थरोंकापडनाकइनरहसेहोताहै। औरकइप्रकारकेपडतेहैं।इसलि
कानिमित्तकहतेहैं॥४८॥ गाथा॥ सालासिछसारिछं॥खज्जूरीफलसमाणरूवावाजयणिवडंतिपक्करया॥
सुभिक्खंतिणायवं॥४९॥ भावार्थः॥ चांवलसारसा यासजूरफलजेसजहांपत्थरगिरे वहांसुभिक्षहोगा
९॥ गाथा॥वधीफलसारिसाबा॥मंजूसावारसारिसणूवा॥ वाजयणिवडंतिपक्करया॥ तछसुभिक्खंतिणायवं
५०॥ भावार्थः॥ वदरीफलजैसे मूंगजेसे अरहडजैसे पत्थरकापडनाभीसुभिक्षकरताहै॥ गाथा॥ मंवुक्क

मुतिसमिसा। घोरंवरिसंकरणिवइंति। जइणिवडंति रत्ताओ। वभूदवारिमागमाभणिया॥५५१॥भावार्थ॥ शंखजैसे
सफेदधोटेधोटेमसूरजैसेपत्थरगिरैतो पानीकेवरसनेको खवरदेतेहै॥५५१॥गाथा॥ मंडुककुसुमसरिसा गय
दंतसमानरूवसंकासा। जइदीसंतपडंता। देसविणासंतुणायवा॥५५२॥भावार्थ॥ मेंडकघडे हाथीदांतजैसे
नगरपत्थरपडैतोजरूरदेशनाशकरताहै॥५५२॥गाथा॥करिकुंभछत्तसरिसा। याजीवजायमाजइपडंति कु
वंतिदंसणासं। रायाणंसवाविणासंति॥५५३॥भावार्थ॥ मटकजैसे हाथीजैसे छत्रजैसे थालीजैसे यावज्र
कारमेंपत्थरपडैतोदेशनाशकरतेहै ओरराजाकोभीमृत्युकासूचकहै॥५५३॥अथविद्युल्लतारूपगाथा॥इं
दस्सिदिसभाया। जइविज्जूसंपयासराजछ्छवाउम्मासियवारिसं नछ्यहोहिंतणायवा॥५५४॥भावार्थ॥यदिइन्
रदिशाकाविजलीचमकेतोहवाचलैयाअवश्यपानीवरसैगा॥५५४॥गाथा॥आगियेजइदीसइवाहोमर
पंचतथकोवदीतयमासियंचवारिसिं। मासंतुणवारिसयदेवा॥५५५॥भावार्थ॥यदिअग्निकोणमेंनजरआ
वेतोव्याधिसमृत्युसूचकहै ओरतीनमाहतक अवश्यमेवपानीवरसैगा॥५५५॥गाथा॥विसरगामरायरोगस

णासोहवइणिद्दिठो॥ अहिदंतमसयमूसया उप्पत्ती णत्थि संदेहो ॥५६॥ भाषार्थ॥ और शहरयांका नाश हो
॥ सांप उंस मच्छर चूहे इनकी ज्यादा पैदा होगी॥५६॥ गाथा॥ जम्मा दु पुणो दिठो॥ सुभिक्ख आरोगियाहवइविज्जू
॥ याइगब्भणासं वाल विणासं च णिय मेण ॥५७॥ भाषार्थ॥ यो दक्षिणा दिशाको नजर आवेतो
॥ यता करती है॥ परंतु गर्भनाश और बच्चोंका तकलीफ ज्यादा पहुंचाती है॥५७॥ गाथा॥ वा
॥ लेकालेयवरिसयदेवो॥ जइसमरइदिसाये॥ विज्जुलकंतीयदिसिज्जा॥५८॥ भाषार्थ॥
॥ वा ज्यादा चले और मोके मोके पर पानी वरषेगा॥५८॥ गाथा॥ अहवायव्व
विणासयवासिं॥ चोराकुतियवहुया॥ देसविणासं कुणइराया॥५९॥ भाषार्थ॥ यदि वायव्यकोणमें च
॥ लो हवा ज्यादा चले पानीकम पडे चोर जादा हों राजाका देश नाश हो॥५९॥ गाथा॥ अहवारुणीपदिठा
॥ दुवरिसइ कुणइखेम सुभिक्खं॥ वायवेरायभयं॥ विप्पाणभयंकरीविज्जू॥६०॥ भाषार्थ॥ पूर्व दिशामें
बिजली कुशल सुभिक्ष करती है॥ वायव्यकी बिजली ब्राह्मणोंको भय करती है॥६०॥ गाथा॥ नउवासिसज्जइंदा

सरसाणायतस्सहोइणिप्पनो।सोमारजरदीसइ।सीफलवाभुवविजू॥८०॥भावार्थ॥यदिपश्चिमकोनजरआवे
तोपत्तो।वृषवरषेनाजअच्छाहोइठडोहवाचवेअगी॥८१॥गाथा॥अहवमायविणासंचोराणभयंअहसिवदेहि
ईसाणुसुभिखंरोगाहाणीयवाहिणाधयरी॥८२॥भावार्थ॥ईशानकोणकी।विजलीराजाकीमृत्युचोरभय
सुभिक्षरोगहानिवतलातीहे॥८२॥गाथा॥अहमेघाणांरूपं।अहमग्गसिरदेवे।वरिसइजच्छयदमणयरम्मि
वाभुयइजिठमासे॥सलिलंणिपमेणतच्छया॥८३॥(अवमेघोंकारूपकहतेहें)॥भावार्थ॥यदिमागेशीर्ष
महिनेमेंपानीवरषेतोअवश्यजेष्ठमहीनेमेंपानीकानाशहोगा॥८४॥गाथा॥अहपोसमासवारिसइ।निजुव
उणाहयलम्मिजइदेवो।छठमासवारिसइ।वहुयंचवपुव्वएतच्छा॥८४॥भावार्थ॥अगरपोषमासमेंबिचलोव
मक्केपानीवरषेतोअषाढमहीनेमेंअच्छीवर्षाहो॥८५॥गाथा॥अहमाहफग्गुणेसुय।दोनीणखियाउअभ
उच्छठउमावउमासे।वरिसइजुत्तिणायवो॥८५॥भावार्थ॥अगरमाघओरफाल्गुनमेंशुक्लपक्षमेंनवदिन
पानीवर्षेतोछठेओरनवमेंमहीनेमेंजरूरपानीपडेगा॥८६॥गाथा॥अव्वाणेमेहपत्तो॥कालेकालेजहापय

सिजानहोहद्दिवाहिभयंवासरत्तेणसंदेहो॥६७॥भावार्थ॥अगर आश्लेषामेंवादलछायेरहें औरहवाचलतीरहैतोयहांपरजरूरव्याधिरातदिनछायरहैगी॥६७॥गाथा॥अहक्कित्तियाहिवासुसइमसस्साणविणास
दवा॥रोहिणिसुस्सुप्पत्ती।देसस्सविस्साछिसंदेहो॥६८॥भावार्थ॥अरकृत्तिकानक्षत्रकोपानी
वर्षानकरताहै॥६८॥गाथा॥ज रमयसिरम्मिवरिसइलछुसुभिक्खंतिहोइणायव्वो।अद्दायवि
पुणव्वसेमासवरिसंतो॥६९॥भाषार्थ॥यदिमृगशिरनक्षत्रकोपानीवरषैतोअवश्यसुभिक्षहोगा॥आ
वरषैतोखंडवृष्टिहो।औरपुनर्वसुकोवरषैतोएकमासपर्यंतवर्षारहैगी॥६९॥गाथा॥पुस्सेवाउस्मासं।
यउच्छुहोइसंपत्ती॥असलेसेवहुउदयंसस्साणविणासणंहोइ॥७०॥भाषार्थ॥पुष्यनक्षत्रकोवरषैतोअ
षीहोगी॥औरनाजअच्छाहोगा॥औरअश्लेषाकोयदिपानीवरषैतोनाजकानुकसानहोगा॥७०॥गाथा॥
महपग्गुणीहिवरिसइ।खेमसुभिक्खंवहवेइणायव्वो।उत्तरफग्गुणिहच्छ।खेमसुभिक्खंवियाणाहि॥७१॥
थ॥मघाऔरपूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रकोयदिपानीवरषैतोकुशलऔरसुभिक्षहोताहै।उत्तराफाल्गुनीऔरह ॥२५॥

त्तको पानी वरषै तो भी सुभिक्ष और आनंद होता है॥ ७१॥ गाथा॥ चित्ताहिं मंद वासं साइहिं महवर वाद परिवऊ।
बहु वरिसं च विसाहा। अणुराहेण खिवऊ वरिसं॥ ७२॥ भावार्थः॥ चित्रा नक्षत्र को पानी वरषै तो वर्षा मंद होगी॥ स्वा
ति को वरषै तो मामूली पानी पडेगा॥ विशाखा और अनुराधा नक्षत्र को पानी वरषै तो खूब मेह होगा॥ ७२॥ गाथा
जोरसु असमादिठे। मूल अणू दयं गारं तं देइ नइरुइ वारि वासं उत्तप्पवेण संदेहो॥ ७३॥ भावार्थ॥ ज्येष्ठ नक्ष
त्रको पानी वरषै तो पानी की कमी रहे। और मूल नक्षत्र को पानी वरषै तो अच्छा पानी गिरेगा॥ पूर्वा और उत्तरा
षाढ नक्षत्र को पानी वरषै तो पानी अच्छा पडेगा और पवन चलेगी। इसमें संदेह नहीं॥ ७४॥ गाथा॥ सवण कति
यमासे। चारि संणास इ साछि संदेहो। उदय हवइ धणिइ वसिसइ दऊण संदेहो॥ ७५॥ भावार्थ॥ श्रवण नक्षत्र को
पानी पडै तो कातिक मास में पानी का नाश होगा॥ धनिष्ठा नक्षत्र में पानी वरषै तो खूब वर्षा होगी॥ ७५॥ गाथा
सयभिस भद्दव आऊ पुव्वत्तरया वि बहु जु विदि। निरवइ अस्सिणी भरणी। वामारस्स इहिं दित्ति॥ ७६॥ भावार्थ
शतभिषा। पूर्वाभाद्रपद। उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में पानी पडै तो बहुत वर्षा होगी॥ और रेवती। अश्विनी। तथा

भरणीरुनन त्रमें पानी पडैतो भारूख होतो है॥७५॥गाथा॥रोहिणिपयोगा॥वामा ब्रह्मगब्भकालम्मि॥
चिंतयंतो॥एणाविद्गसो हमोहोदि॥७६॥भावार्थ॥यह जो नक्षत्रयोग कहा गया है इनको गर्भकाल कहते हैं
और ज्ञानी जन इनपर अमल करते हैं उनको निश्चय ही फल होता है॥७६॥अथ केतु स्वरूप प्रारम्भः॥गाथा॥
अहकाल पुनचारियां केतुस्सहाणि दुम्ह वत्तिचनारिणियमेणा॥७७॥भावार्थ॥
नारालनाचाहिये अब काल पन जो धूमकेतु नाम सप्रसिद्ध है उसके सुखदुखके फल कहते हैं॥७७॥
उस्सगुहानिपुस्सा॥सपमिवं होइ असह रूवेण॥जं छाजन्तके उ नंदिसाणिणासयाहोइ॥७८॥भावार्थ॥
केतु अशुभ रूप होता है और जिस दिशाको यह पैदा होता है खासकर उसही दिशाको नाशका है
७८॥गाथा॥अह पच्छिमेण भमो॥एउ ठदो पुब्वे दो विणासेइ॥पुव्वेण पच्छिमेणाइ॥इणु विचरीप चारेणा॥७९॥
॥भावार्थ॥यदि यह पूर्व दिशामें उदय होतो पश्चिमदिशाको और पश्चिममें उदय होतो पूर्वे
७९॥गाथा॥जोह पुच्छं तच्छभयं॥जच्छ सिरातच्छणि ब्रऊ होइ॥सिरपुच्छमज्झरासे॥प

भाषार्थः॥ जिधरपूंछहो उधरभयकर्त्ता और जिधरमस्तकहो उधरसंग्रामकर्त्ताहै जहांपूंछ और मस्तककावी
चहो वहां आनंदकर्त्ताहै॥१८०॥ गाथा॥ जस्सुरगुरुणा सहिऊ दीसइ केऊ णहम्मि उग्गमिओ॥ अकइ विप्प
विणासत्ति मासचउत्थेण संदेहो॥१८०॥ भावार्थ॥ अगरगुरुके साथ उगनाकेतु आकेतु दिखाई देतो चोथेम
हीनें ब्राह्मणोंका नाश करताहै॥१८१॥ गाथा॥ भुविलोए दे सोरिसं ससस्साण विणासणो हवइ केऊ सुक्केण वलि
णासो मासेण यबालघाईय॥१८१॥ भावार्थ॥ और अलग्रष्ठितथानाजका नाश करताहै केतु शुक्रके साथ उ
दयहोतो त्रियोंका नाश करताहै चंद्रमाके साथ बचोंका घात करताहै॥१८२॥ गाथा॥ सूमिणा रायविणासं॥
राऊ मज्झमि सब लोयस्स॥ बुहसहिऊ सुहकरणो॥ वसविणासो यसूरेण॥१८२॥ भावार्थ॥ और राजाको मृत्यु
सूचकहै यदि सूर्यके साथ नजर आवेतो देशनाश करताहै॥१८३॥ गा॰ आरबा पुण दीसइ णाविद्धि विदिनधुक्का
हृदकेउ॥ अहो सुक मग्गदीसइ नस्सविणासं दितिपुच्छेण॥१८३॥ भावार्थः॥ सायंकालको नजर आवेतो अथ
वा शिशुमार चक्रमें दिखाई देतो महा अशुभहै॥१८४॥ गाथा॥ जइ धुवमज्झे दीसइ केऊ सयलं विणास पुहवी सं

वणगणाणं अचलं चलणं च करेदि मतिणाणं ॥२८४॥ भावार्थः ॥ अथवा ध्रुवके भीतर नजर आवै तो तमाम पृथ्वी
चलकों अचलकों अचलकों चलकर के तबाह करदे ॥२८४॥ गाथा ॥ पुहवी सव्वविणासो णायव्वो जच्छ दीसए वे
डा तम्हा तं पुण देसं परिहरियव्वं पयत्तेण ॥२८५॥ भावार्थ ॥ जहाँ पर केतु नजर आता हो वहाँ पर सकल पृथ्वी
शंकरता है इस लिये ज्ञानियों को चाहिये कि जिस देशमें यह दिखाई दे उस देश का त्याग करदे ॥२८५॥ गाथा ॥
सवणविकहियं त [illegible] णुप्पायाणं तु उवकणं थोवं ॥ जो जं चहिमिलो तं पुण अस्स तु जाणिज्जा ॥२८६॥ भावार्थः ॥
इस प्रकार संक्षेप से उत्पातों का स्वरूप कहा ॥ अगर किसी महाशय के अधिक जानने की इच्छा हो य तो अन्य ग्रंथ
न में देख लेवें ॥२८६॥ गाथा ॥ एवं बहुप्पयारं णुप्पायपरंपरायणारूणं ॥ रिसिपुत्तेणमुणिणा ॥ स
गंथिए ॥२८७॥ भावार्थः ॥ इस प्रकार कितने ही उत्पातों का स्वरूप अल्प ग्रन्थ में गुरु ऋषिपुत्र मुनिने यथाम
वर्णन कीया ॥१८८॥२८७॥ इति श्री ऋषिपुत्रप्रणीत निमित्त शास्त्रं समाप्तम् ॥ ॥श्री॥

॥श्री सं० १९८० आश्विन कृष्णा ८ भृगुवासरे लि० ॥ शंकरलाल शर्म्मा गौड ॥ शुभं भवतु ॥

॥इति॥

॥ऋषिपुत्रप्रणीतंनिमित्तशास्त्रंसंपूर्णं॥